क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद

साहित्य के रंगमंच पर प्रेमचन्द

प्रेमचन्द अगर सामाजिक जीवन में आते तो गांधी और लोहिया से कम नहीं होते : प्रो. राजेश गर्ग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के इलाहाबाद केंद्र में 2 अगस्त 2018 को सायं 4 बजे से सत्यप्रकाश मिश्र सभागार में मुंशी प्रेमचंद जयंती के उपलक्ष्य में **'साहित्य के रंगमंच पर प्रेमचंद'** विषयक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुंशी प्रेमचंद के चित्र पर माल्यार्पण करने के बाद दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की गयी। कार्यक्रम की संयोजक एवं केंद्र प्रभारी डॉ. विधु खरे दास ने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि को फूल देकर स्वागत किया। डॉ. ऋचा द्विवेदी ने प्रभारी को फूल देकर स्वागत किया तथा अध्यक्षता कर रहे सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी का स्वागत डॉ. अनुपमा राय ने फूल देकर किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार गर्ग ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि प्रेमचंद साहित्य के असाधारण व्यक्ति थे। वे मर्यादा को लांघकर बड़ी लकीर खींचने वालों में से एक थे। प्रेमचंद अगर सामाजिक जीवन में आते तो गांधी और लोहिया से कम नहीं होते। गांधी और लोहिया की तरह ही संवेदना प्रेमचंद के भीतर भी थी, जिसके कारण वे महान थे। वे गांधी की तरह ही प्रवास करते रहे होंगे। कल्पना आधारित पात्रों से यथार्थ बोध का अतिक्रमण करने वाले बिरले साहित्यकार थे। संवेदनाओं को प्रेमचंद की तरह ही रचनाओं में निकालना होगा। प्रेमचंद का कथा साहित्य संपूर्ण विश्व का अद्‌भुत साहित्य है। देश को स्वतंत्र कराने की चिंता प्रेमचंद की चिंता थी इसलिए उन्होंने साहित्य के माध्यम से ग्रामीण अंचल के तमाम वंचितों को अपने साहित्य के जरिए खड़ा करने का प्रयास किया। गांव की ओर लौटने को प्रेमचंद ने चरितार्थ किया। प्रेमचंद की दृष्टि से उनके कथा साहित्य का अध्ययन व अनुशीलन वर्तमान समय की नितांत आवश्यकता है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. राकेश सिंह ने कहा कि प्रेमचंद पूरी दुनिया में पढ़े जाते हैं। डॉ. ऋचा द्विवेदी ने भी अपने विचार रखे।

इसके बाद मुंशी प्रेमचंद की कहानी पर आधारित फिल्म **'सद्गति'** का प्रदर्शन किया गया। अंत में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश नारायण त्रिपाठी ने मुंशी प्रेमचंद पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रेमचंद हमारे समय के महत्वपूर्ण रचनाकार थे, सबके जीवन में रचे बसे रचनाकार हैं। शोध छात्र श्री राजेश अहिरवार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कमलेश यादव ने किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डॉ. सुरभि त्रिपाठी, डॉ. सुधा त्रिपाठी, डॉ. शशिकांत त्रिपाठी, डॉ. अनुपमा राय, डॉ. सत्येन्द्र कुमार, श्री नरेन्द्र कुमार दिवाकर, श्री शंभुदत्त सती, श्री मनोज सिंह सहित विश्वविद्यालय के कर्मचारी एवं छात्र/छात्राएं उपस्थित रहे।

प्रस्तुति
इलाहाबाद केंद्र